के कम्प्यूटरों, टेलेक्स मशीनों और टेली-प्रिन्टरों जैसे दर्जनों आधुनिक यंत्रों के आगमन और अबाधित प्रयोग के फलस्वरूप हिन्दी के प्रसार का कार्य वर्षों पीछे पड़ गया है और जहां भी टेलेक्स मशीनें लगायी गई हैं वहां से एक भी तार हिन्दी में नहीं भेजा गया है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि "क" क्षेत्रों में अंग्रेजी के टंकण यंत्रों आदि की तुलना में देवनागरी के टंकण यंत्रों, टंकणों और आशुलिपिकों की संख्या नहीं के बराबर है जबकि उनकी संख्या 50.50 होनी चाहिये थी ; और

(ग) यदि हां, तो उसके क्या कारण हैं और हिन्दी भाषा के प्रसार के लिये क्या नये कदम उठाए गए हैं ?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा महासागर विकास, परमाणु ऊर्जा, इलैक्ट्रानिकी और अंतरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री (श्री के. आर. नारायणन्) : (क) जी नहीं ।

(क) और (ग) राजभाषा में किये जाने वाले कार्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये विभाग में पर्याप्त संख्या में हिन्दी के टाइपराइटर, "आशु-लिपिक" और टाइपिस्ट उपलब्ध हैं ।

हिन्दी भाषा का प्रचार

350. श्री राम चन्द्र विकल : क्या **रक्षा मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि "क" और "ख" क्षेत्रों में राजभाषा अधिनियम की पूर्णत: अवहेलना करते हुए, रोमन लिपि के कम्प्यूटरों, टेलेक्स मशीनों और टेलीप्रिंटरों जैसे दर्जनों आधुनिक यंत्रों के आगमन और अबाधित प्रयोग के फलस्वरूप रक्षा मंत्रालय में हिन्दी के प्रसार का कार्य वर्षों पीछे पड़ गया है और जहां भी टेलेक्स मशीनें लगायी गई हैं वहां से एक भी तार हिंदी में नहीं भेजा गया है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि "क" क्षेत्रों में अंग्रेजी के टंकण यंत्रों आदि की तुलना में देवनागरी के टंकण यंत्रों, टंककों और आशुलिपिकों की संख्या नहीं के बराबर है जबकि उनकी संख्या 50:50 होनी चाहिये थी; और

(ग) यदि हां, तो उसके क्या कारण हैं और हिंदी भाषा के प्रसार के लिये क्या नये कदम उठाए गए हैं ?

रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री संतोष मोहन देव) : (क) सरकारी कार्य को निपटाने में हिन्दी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है । मशीनी सहायता बहुत सीमित संख्या में है और उनके काम बहुत ही कम अनुपात में लिया जा रहा है । सभी संबंधित को इस बात के अनुदेश जारी किए गए हैं कि वे भविष्य में द्विभाषी मशीनें खरीदें ।

(ख) और (ग) इस समय देवनागरी टाइपराइटरों, हिंदी टंककों और हिन्दी आशुलिपिकों की संख्या अंग्रेजी में इनकी संख्या की तुलना में बहुत कम है । फिर भी, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं । हाल ही में 31-3-1990 तक हिंदी आशुलिपिकों और 31-3-1989 तक हिन्दी टंककों के लिये निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये विस्तृत अनुदेश जारी किए गए हैं । देवनागरी टाइपराइटरों की खरीद के लिये भी संशोधित अनुदेश जारी कर दिए गए हैं ।

राजभाषा अधिनियम के उपबंधों का कार्यान्वयन

351. श्री राम चन्द्र विकल : क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह पता लगाने के लिये कभी कोई प्रयास किया गया है कि राजभाषा अधिनियम के उपबंधों और हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के वार्षिक कार्यक्रम का शत-प्रतिशत कार्यान्वयन अभी तक क्यों नहीं किया गया है ;